International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

जनसंचार साधन–शिक्षा के प्रभावी कारक के रूप में

शोधार्थी,मेघा साहू
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र
शोध निर्देशक,डॉ रिशिकेश यादव

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

Abstract

प्रौद्योगिकी जीवन और समाज के हर पहलू को छू रही है। आजादी के बाद से , हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली काफी बड़े आकार की प्रणाली में उभरी है , जो देश भर में संस्थानों में प्रमाण पत्र , डिप्लोमा , डिग्री, स्नातकोत्तर डिग्री और डॉक्टरेट स्तर पर विभिन्न प्रकार के विषयों में शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करती है। भारत में उच्च शिक्षा का सामान्य परिदृश्य वैश्विक गुणवत्ता मानकों के बराबर नहीं है। इसलिए , देश के शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता के बढ़ते मूल्यांकन के लिए पर्याप्त औचित्य है।तकनीकी शिक्षा के मानक को बनाए रखने के लिए, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) की स्थापना 1945 में हुई थी। एआईसीटीई मानदंडों और मानकों की योजना , निर्माण और रखरखाव , मान्यता के माध्यम से गुणवत्ता आश्वासन , प्राथमिक क्षेत्रों में वित्त पोषण के लिए जिम्मेदार है। निगरानी और मूल्यांकन , प्रमाणीकरण और पुरस्कारों की समानता बनाए रखना और देश में तकनीकी शिक्षा के समेकित और एकीकृत विकास और प्रबंधन को सुनिश्चित करना।

Keywords: *जनसंचार मीडियाशिक्षा विकास*

1प्रस्तावना

जनसंचार का अर्थ है सूचना और विचारों का प्रसार व संचार के आधुनिक साधनों के जरिए मनोरंजन प्रदान करना। जनसंचार के इन माध्यमों में इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया दोनों ही आते हैं । सूचना और संचार को मीडिया की नई तकनीक ने पूरी तरह से एक दूसरे में समाहित कर दिया

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

है। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में मीडिया के दो क्षेत्र ऐसे थे जिन्होंने भूमंडलीय स्तर पर अपना विस्तार किया था। एक रेडियो प्रसारण और दूसरा सिनेमा। लेकिन आज संचार का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसका विस्तार भ ूमंडलीय स्तर पर न हो रहा हो। इसको संभव बनाया है उपग्रह संचार प्रणाली ने। उपग्रह संचार प्रणाली ने ही केबल टीवी के लिए मार्ग प्रशस्त किया। सूचना और संचार के क्षेत्र में जो नयी खोजें हुई हैं और जिस नयी डिजिटल टेक्नोलॉजी का विस्तार हुआ है, उसे सही परिप्रेक्ष्य में समझना जरूरी है (आलम, 2012)। वर्तमान शैक्षिक समाज के लिए सूचना प्रौद्योगिकी व सम्प्रेषण तकनीकी का सम्प्रत्यय परिचय का मोहताज नहीं है। इसकी महत्ता सम्पूर्ण शिक्षातन्त्र पर सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। आज ज्ञान की संरचना वैश्विक रूप धारण कर चुकी है। आधुनिक श्रव्य–दृश्य शिक्षण सामग्री शिक्षण–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बन गयी है। आधुनिक शिक्षा जगत् में सूचना सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन मल्टीमीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है। शिक्षा में इन साधनों का प्रयोग करते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी व तकनीकी की उपादेयता बढ़ जाती है। वर्तमान में शिक्षा में तकनीकी व संचार साधनों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी, सम्प्रेषण की आधुनिक विधियाँ व मल्टीमीडिया शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया को जीवंत बनाए हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी व संचार तकनीकी ने शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों (औपचारिक, अनौपचारिक व निरौपचारिक शिक्षा) को प्रभावित किया है। औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत विद्यालयी शिक्षा, शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं, व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा के संस्थानों में संचालित शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया आज व्यापक पैमाने पर इसका प्रयोग कर रही है और शिक्षा के गुणात्मक संवर्धन हेतु यह एक अनिवार्य शर्त भी है। अनौपचारिक शिक्षा में प्रौढ़ शिक्षा, जनशिक्षा व समाज शिक्षा के सफल संचालन हेतु संचार साधनों के प्रभावशाली उपयोग की आवश्यकता अनुभव होती है। निरौपचारिक शिक्षा अर्थात् दूरवर्ती शिक्षा में तो सूचना प्रौद्योगिकी व संचार साधनों ने एक नई संचार क्रान्ति का प्रादुर्भाव किया है (सिंधु एवं विकल, 2009)।

1.1 शिक्षक, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण में सम्बन्ध

प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने की पद्धति अलग–अलग होती है। साथ ही कार्य करने का ढंग, कार्य का उद्देश्य, कार्य के प्रति समर्पण जैसे अनेक बातें कार्य के परिणाम को प्रभावित करती हैं। कार्य से संतुष्ट एक शिक्षक ही प्रशिक्षणार्थियों अर्थात भावी शिक्षकों को पूर्ण ऊर्जा, उत्साह एवं समर्पिण के साथ शिक्षा प्रदान कर सकता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि कार्य संतुष्टि का शिक्षक के शिक्षण से सीधा सम्बन्ध है।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

कार्य संतुष्ट एक शिक्षक सेवा, समर्पण, तन्मयता एवं राष्ट्र निर्माण की भावना के साथ शिक्षण कार्य करता है, जो कि विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन, शिक्षक पेशे के प्रति समर्पण, चरित्र निर्माण, भविष्य निर्माण, देश के प्रति समर्पण जैसी खूबियां विकसित करने में सहायक होगा और शिक्षक प्रशिक्षणार्थी इससे पूर्ण मनोयोग से प्रशिक्षण ग्रहण कर आदर्श शिक्षक बनने की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

1.2शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका

मीडिया का शिक्षकों, पत्रकारों, निर्माताओं, अन्य व्यावसायियों और बच्चों के प्रशिक्षण में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। जन संचार मीडिया (जैसे टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा और पत्रिका आदि) का उद्देश्य मनोरंजन था लेकिन इसका उपयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है। जनसंख्या में वृद्धि और जीवन शैली के विकास ने मनोरंजन की मांग को काफी तेज कर दिया है।ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो विभिन्न क्षेत्रों जैसे मौसम, राजनीति, युद्ध स्वास्थ्य, वित्त, विज्ञान, फैशन, प्रौद्योगिकी, आहार और पोषण, अपराध और हिंसा, शिक्षा, उद्योग, व्यवसाय, प्रबंधन और रोजगार के सुवसरों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखते हैं। यह रेडियो, टेलीविजन, सोशल मीडिया प्लेटफार्म और विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं और लेखों से प्राप्त किया जा सकता है।राजनीति और समाचारों से संबंधित डिजीटल प्लेटफार्म पर पोस्ट, संदेश और अधिसूचनाएं मित्रों द्वारा या सोशल मीडिया पर अनुसरण करने वाले लोगों द्वारा साझा की जा सकती हैं। इसलिए, अनिच्छुक व्यक्ति भी समसामायिक समाचारों के बारे में जान सकते हैं या जानबूझकर ज्ञान प्राप्त किये बिना अपडेट प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, डिजीटल मीडिया निष्क्रिय अधिगम की संभावनाओं को खोलता है। बोक्स (2019) ने उल्लेख किया कि मीडिया प्लेटफार्म से ज्ञान प्राप्त करने से बचना कठिन है, खासकर जब मीडिया का वातावरण समाचार अपडेट,अधिसूचना और बुलेटिन के साथ प्रमुखता ग्रहण कर लेता है।

1.3शिक्षा के क्षेत्र में सहायक सामग्री

ये दृश्य–श्रृव्यप्रभावी उपकरण हैं जो अधिगम की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं और निरूपण के माध्यम से अधिगम की प्रक्रिया में योगदान देकर मन को अपील करते हैं। उन्हें बहु–संवेदी सामग्री भी कहा जाता है क्योंकि कि वे पूरक उपकरण है जिनके द्वारा शिक्षक, एक से अधिक संवेदी नेटवर्क के अन ुप्रयोग के माध्यम से अवधारणाओं और व्याख्याओं को स्पष्ट करने, स्थापित करने और उन्हें सह–संबंधित करने में सक्षम होते हैं। वे रंग, चाल या रिकार्ड किये गये संदेशों या यहां तक कि ऐसी सामग्री के उपयोग के माध्यम से छात्र को प्रोत्साहित करते हैं जो शिक्षार्थी की इच्छा और रुचि को आकर्षित करता है (नाइजी, 2016)।

- यह शिक्षार्थियों को यथार्थवादी अनुभव प्रदान करने में मदद करता है जो ध्यान

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

लगाने और एकाग्रता के निर्माण में मदद करता है। साथ ही साथ घटना को समझने में मदद करता है।

- यह सोच और समझ को उद्दीप्त करने में सहायक है।
- श्रव्य–दृश्य सहायक साधन कक्षा के उद्देश्यों को बढ़ाते हैं और छात्रों की विषय के बारे में जानकारी को प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के अतिरिक्त तरीके प्रदान करते हैं।

1.4जनसंचार केमाध्यमोंकाशैक्षिकमहत्त्व:

आधुनिक युग में जनसंचार के माध्यमों का बहुत अधिक शैक्षिक महत्त्व है। इनके महत्त्व को सभी ने स्वीकार किया है। जनसंचार के सभी माध्यम शिक्षा के अनौपचारिक साधन के रूप में कार्य करते हैं। इनके द्वारा जनमत का निर्माण किया जाता है। दूसरे शब्दों में 'हम यह कह सकते हैं कि जनसंचार के माध्यमों का मुख्य कार्य जनमत का निर्माण करना है। जनमत का अभिप्राय जनता के उस सामान्य मत से है जो वैयक्तिक मतभेद से ऊपर है और यह व्यक्तिगत मतभेद की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली और क्रियाशील होता है "जनसंचार" संचार की अपेक्षा अधिक व्यापक है। जब एक व्यक्ति अथवा कई व्यक्तियों द्वारा यह कार्य व्यापक रूप में होता है, अथवा दूसरे शब्दों में इनके द्वारा सूचनाओं का आदान–प्रदान कई व्यक्तियों अथवा समूहों अथवा समाजों में एक समय में होता तो इस प्रक्रिया को "जनसंचार" की संज्ञा दी जाती है। वास्तव में जनसंचार संचार से भिन्न है। संचार और जनसंचार के अंतर को स्पष्ट करने का सबसे अच्छा उदाहरण टेलीफोन और रेडियो का है। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से टेलीफोन पर बात करता है तो उसे चार कहते हैं, परन्तु जब वही व्यक्ति रेडियो से अपनी बात अनेक लोगों तक पहुँचाता है तो उसे जनसंचार कहा जायेगा। इस तरह संचार जहाँ व्यक्तिगत है वहीं दूसरी ओर जनसंचार की प्रकृति सामूहिक है। गिब्ज ने जनसंचार की परिभाषा देते हुए लिखा है–"जनसंचार उस अभिव्यक्ति को कहा जाता है जो सामूहिकता से प्रभावित होती है।" पील ने जनसंचार को परिभाषित करते हुए लिखा है–"जनसंचार एक इस तरह का व्यवहार है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अथवा संस्था अपने विचारों को साधारण जन तक पहुँचाती है।" इस प्रकार जनसंचार एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अथवा संस्था जनमत को प्रभावित करती है।शिक्षा के अन्तर्गत जनसंचार के माध्यमों का विशेष महत्त्व है। शिक्षा में जनसंचार के महत्त्व को समझने के पूर्व हमारे लिए यह जान लेना आवश्यक है कि आधुनिक भारतीय समाज में जनसंचार के माध्यम कौन–कौन से हैं? आधुनिक युग में जनसंचार के माध्यमों में चित्र पोस्टर, लिखित साहित्य, आलेख, प्रेस एवं समाचार–पत्र, चलचित्र अथवा सिनेमा, रेडियो, दूरदर्शन (टेलीविजन), टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन आदि उल्लेखनीय हैं। यहाँ जनसंचार के शैक्षिक महत्त्व का उल्लेख संक्षेप में किया जा रहा है

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

जन–संचार, जहाँ एक ओर सामाजिक नियंत्रण की शिक्षा में सहायता प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न समाजों की संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के निकट लाकर पारस्परिक सद्भावना उत्पन्न करता है। एक राष्ट्र अथवा समाज को एक–दूसरे की प्रगति से अवगत कराता है। जनसंचार की सहायता से पुराने आदर्शों एवं विश्वासों में परिवर्तन और नये विश्वासों एवं आदर्शों को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। जनसंचार उन व्यक्तियों को प्रभावित करता है जिनकी मान्यताएँ प्रचार के निर्देशों के अनुकूल होती है। व्यक्ति अपनी मान्यताओं एवं आदर्शों तथा निश्चित मनोवृत्तियों के विपरीत होने वाले निर्देशों को कम ग्रहण कर पाता है। समाज में जनतंत्रीय ढाँचे को सुदृढ़ बनाये रखने में भी जनसंचार की महती भूमिका होती है। इन माध्यमों से शासकीय नीतियों का प्रचार जनसधारण तक होता है। जिसबर्ट का विचार है कि, "कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनमें कोई भी प्रचार प्रभाव नहीं डालता । जहाँ तक सामजिक परिवर्तनों का संबंध है, प्रचार एक गौण माध्यम है, मुख्य नहीं, अर्थात् केवल प्रचार मात्र के आधार पर सामाजिक परिवर्तन नहीं होता, केवल सामाजिक परिवर्तन की गति को सहायता प्रदान की जा सकती है।

1.5शैक्षिक सामग्री

प्रभावशाली शिक्षा एवं शिक्षण के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है। सामान्यतः शैक्षिक सम्प्रेषण के भौतिक साधनों को जनसंचार कहा जाता हैय जैसे–पुस्तकें, छपी हुई सामग्री, कम्प्यूटर, स्लाइड, टेप, फिल्म एवं रेडियो आदि । जनसंचार साधनों के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है तथा नवीन ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाता है।जब सम्प्रेषण किसी जनसंचार माध्यम और व्यक्ति के बीच होता है तो हम उसे मास मीडिया (डें डमकपं) कहते हैं अर्थात् वह सम्प्रेषण साधन, जिसमें व्यक्ति की अनुपस्थिति में छपी हुई सामग्री, रेडियो अथवा दृश्य–श्रव्य सामग्री (दूरदर्शन) द्वारा सम्प्रेषण होता है जनसंचार कहलाते हैं। इन साधनों के माध्यम से एक समय में अनगिनत (न्दबवनदजमक) व्यक्तियों के साथ एकतरफा सम्प्रेषण होता है अर्थात् सम्प्रेषणकर्ता को पृष्ठ– पोषण प्राप्त नहीं होता। जनसंचार के इन माध्यमों को शिक्षा के प्रभावी कारक के रूप में इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

1.6शैक्षिकरेडियो

आधुनिक संचार के सभी माध्यमों में रेडियो सर्व–सुलभ माध्यम है। भारत में 99ः से अधिक जनसंख्या में यह माध्यम अपनी पहुँच रखता है। इटली निवासी जी. मारकोनी ने 19वीं शताब्दी में इसका आविष्कार किया था। यह रेडियो विद्युत चुम्बकत्व के सिद्धान्त पर कार्य करता है। रेडियो वर्तमान समय में जनसंचार का सबसे मितव्ययी साधन है, इस कारण यह विभिन्न आयु वर्गों तथा दूर–दराज के क्षेत्र में अपनी पहुँच रखता है। इसकी सर्व–सुलभता तथा उपयोगिता को देखते हुए शैक्षिक उद्देश्यों के लिये इसका अधिक प्रयोग

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

हो रहा है। रेडियो के प्रयोग से एक कुशल तथा प्रभावशाली शिक्षक को बहुत अधिक व्यक्ति अथवा विद्यार्थी एक साथ श्रवण तथा मनन कर सकते हैं, जबकि कक्षागत शिक्षण में कुछ 40–60 छात्र ही लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त रेडियो के माध्यम से कार्यक्रम का प्रसारण रुचिकर लगता है क्योंकि इसका प्रसारण अनुभवी व्यक्तियों की सहायता से किया जाता है। इस प्रकार रेडियो के माध्यम से अनुदेशन प्रदान करने से विद्यार्थी में अधिगम के प्रति एक नवीन उत्साह उत्पन्न होता है। रेडियो प्रसारण के माध्यम से विद्यार्थी में शब्दों के प्रयोग, एकाग्रता, सूक्ष्मता से श्रवण करना तथा उत्साही वार्तालाप में वृद्धि होती है। अतरू इसे औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा के विकास के लिये प्रयोग किया जाता है। रेडियो के माध्यमसेविद्यार्थियों तथा विद्यालय के साथ–साथ अन्य व्यक्ति भीजैसे–सामाजिक कार्यकर्ता, वरिष्ठ नागरिक, स्वस्थ कर्मी, अशिक्षित तथा महिलाएँ इत्यादि लाभान्वित होते हैं। रेडियो कार्यक्रमों से शैक्षिक अवसरों की स्थापना एवं उनके विस्तार में सहायता प्राप्त होती है। इन सभी कारणों से भारत में भी शैक्षिक रेडियो का उपयोग हो रहा है।

1.7शैक्षिकदूरदर्शन

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में सूचना माध्यमों ने निःसन्देह मानव तथा मानव के जीवन को पूर्णरूप से परिवर्तित कर दिया। इस परिवर्तन में सबसे अधिक योगदान संचार माध्यमय जैसे–दूरसंचार सेवाओं तथा दूरदर्शन सेवाओं के कारण सम्भव हुआ। इस समयकाल में इन तकनीकी सेवाओं ने इतनी प्रगति की है। सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम के रूप में ही परिवर्तित हो गया है। अब मानव के लिये दूरियों (क्पेजंदबमे) का कोई अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। यदि व्यक्ति विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में जाये तो वह कुछ ही घण्टों से पहुँच सकता है तथा यदि वह विश्व के किसी भी अन्य भाग में उपस्थित अपने मित्र अथवा सम्बन्धी से वार्तालाप करना चाहे तो वह ऐसा पलक झपकते ही कर सकता है। अतरू यह कहना तनिक भी अनुचित नहीं होगा कि आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों ने मानव के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न कर दिया है।

2 बहु. माध्यमीयशैक्षिककार्यक्रमएवंइसकाकक्षामेंउपयोग ;

मल्टी–मीडिया एक तकनीक है जो वर्तमान में आधुनिक कम्प्यूटर का एक आवश्यक अंग बन चुका है। पूर्व में मल्टी–मीडिया का अर्थ संचार के विभिन्न साधनों के मिले–जुले स्वरूप से लगाया जाता था, किन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इस शब्द का अर्थ एक ही कम्प्यूटर पर टेक्स्ट, ग्राफिक्स, एमीनेशन.

2.1उच्चशिक्षाकेक्षेत्रमें

जब उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एरिक एशबी ने 1967 में चार क्रान्तियों का उल्लेख किया तो उन्हें इस

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

बात का आभास भी नहीं होगा कि चौथी क्रान्ति शैक्षिक क्षेत्र में पाँचवीं क्रान्ति को जन्म देगी जिसके परिणामस्वरूप संसार की लगभग सारी शिक्षा व्यवस्था का ब्यौरा अर्थात शिक्षा दर्शन, शिक्षा की विषय–वस्तु, पाठ्यक्रम शोध–पत्र, पत्र–पत्रिकाएँ, ई–बुक्स, ई–लाईब्रेरी एक डिब्बे में बन्द हो सकेगा और संसार का कोई भी व्यक्ति अथवा विद्यार्थी कहीं भी किसी भी एक कोने में बैठकर ऑनलाइन अध्ययन के द्वारा बड़ी से बड़ी उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त कर सकेगा। उस समय ऐसी बातों को लोग मजाक समझते थे और यकीन नहीं करते थे, लेकिन आज सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने यह साबित कर दिया हैं। हाल में हुए एक अध्ययन के अनुसार आज के विद्यार्थी कालेज और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों से केवल एक तिहाई शिक्षा अपने सहपाठी समूह से और बाकी स्व–अध्ययन के द्वारा सीखते हैं। सिर्फ विश्वविद्यालय ही सीखने के स्रोत नहीं रहे हैं, न ही वे सभी को आजीवन शिक्षा के आधार पर उच्च शिक्षा, तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं। आज मल्टीमीडिया और इंटरनेट के प्रयोग ने एक नए युग की शुरुआत कर दी है, जिसने विद्यार्थियों और शिक्षकों में उम्मीदे जगा दी हैं।नई तकनीक मशीने एवं इंटरनेट सीखने वालों को लचीलापन प्रदान करती हैं। चूँकि ये सीखने वालों की सभी इन्द्रियों को एक साथ परस्पर संबंधित करती हैं, इसलिए सीखना दिलचस्प हो जाता है। इन मशीनी इकाइयों द्वारा शिक्षा को मनोरंजन के साथ मिश्रित करना भी आसान हो जाता है। इस प्रकार यह शिक्षा आधारित मनोरंजन बन जाता है। ये काफी प्रोत्साहन देने वाले होते हैं और सीखने वालों को 'शक्ति' और 'सत्ता प्रदान करते है। इस प्रकार सूचना के इस युग में शिक्षा और सीख के लिए नई तकनीकों का अधिक दिलचस्प और कारगर ढ़ंग से प्रयोग करना संभव हो गया हैं।

2.2शिक्षाकेक्षेत्रमेंइंटरनेट

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट का बहुतायत से उपयोग किया जा रहा है। इसकी सहायता से शैक्षिक स्तर पर उन्नति हुई है। आज दुनिया के किसी भी कोने में बैठा विद्यार्थी इसकी सहायता से उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है। ई–शिक्षा (ई–लर्निंग) को सभी प्रकार इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करता है। ई–शिक्षा में वेब–अधारित शिक्षा, कम्प्यूटर आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएँ और डिजिटल सहयोग शामिल है।

पाठ्य–सामग्रियों का वितरण इंटरनेट, इंटरानेट, एक्सट्रानेट, ऑडियो–वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी रोम के माध्यम से किया जाता है। आज कल इंटरनेट का प्रयोग न केवल ई–शिक्षा में ही किया जा रहा हैं, बल्कि ऑनलाइन फॉर्म भरने, नौकरी के लिए आवेदन करने और पुस्तके पढने में भी किया जा रहा हैं। आज विद्यार्थी

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

शिक्षा के सभी क्षेत्रों में इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं।

2.3उच्चशिक्षामेंआधुनिकशिक्षणमशीनोंकाउपयोग

आज शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक शिक्षण मशीनों मोबाइल, स्मार्ट फोन, लैपटॉप, टेबलेट, रेडियो, टेपरिकॉर्डर, ग्रामोफोन, टेलीविजन, प्रोजेक्टर, भाषा प्रायोगशाला आदि द्वारा शिक्षण आदि के प्रयोगों ने उच्च शिक्षा प्रक्रिया का मशीनीकरण कर दिया है। आज मशीनों के प्रयोग से शिक्षक अपने विद्यार्थियों कों आसानी से अपने ज्ञान कौशल से लाभान्वित करा सकता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण मशीनों का उपयोग आज तेजी से बढ़ता जा रहा है।

2.4ऑनलाइनपुस्तकेपढना

विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हेतु अनेक पुस्तकों की आवश्यता होती है, जिन्हे खरीद पाना सबके लिए सम्भव नहीं है। इसके अलावा पुस्तकें महंगी और आसानी से उपलब्ध न होने के कारण विद्यार्थी ऑनलाइन पढना पसंद करते हैं। अतरू ऑनलाइन पुस्तकों की उपलब्धता इन सभी विद्यार्थियों को लाभान्वित करती है। आजकल सभी प्रकार की पुस्तकों का विस्तारपूर्वक विवरण इंटरनेट पर उपलब्ध रहता है, जिससे ऑनलाइन बुक्स रीडिंग का अधिक प्रचलन हो गया है। विद्यार्थी अपनी पूरी पढ़ाई इन पुस्तकों का उपयोग करके कर लेते हैं।

2.5ऑनलाइनपढ़ाई

यदि आप किसी व्यवसाय में रहते हुए अपनी शिक्षा जारी रखना चाहते है या आपके पास कक्षा में जाने का समय नहीं है, तो इसके लिए विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा के लिए सम्बन्धित संस्थान में विद्यार्थी ऑनलाइन घर या ऑफिस में बैठे–बैठे अपना अध्ययन जारी रख सकते है। ऑनलाइन परीक्षा भी दे सकते है। इससे उच्चf'k{kk dh ओंर विद्यार्थियों का रुझान तेजी से बढ़ा रहा है।

2.6 उच्च शिक्षा में टेलीकांफ्रेसिंग

इसका चलन अमेरिका में टेलीविजन तथा टेलीफोन पिक्चर फोन के जरिए 1960 में आरंभ हुआ। कांफ्रेसिंग हेतु कम्प्यूटर व इंटरनेट द्वारा प्रदत्त बहु–माध्यमी सेवाओं का उपयोग किया जाता है। यहाँ हम इंटरनेट सेवाओं द्वारा लिखित सामग्री, रेखाचित्रों आदि को कॉफ्रेसिंग में भाग लेने वाले व्यक्तियों को प्रेषित कर सकते हैं। ऑडियो–वीडियो कॉफ्रेसिंग, जब कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी और इंटरनेट से अच्छी तरहा जुड़ जाती हैं, तो ऐसी टेलीकांफ्रेसिंग शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को ही अपनी–अपनी स्वाभाविक रुचियों, समय और साधनों की उपलब्धता तथा सीखने–सीखाने की गति के आधार पर स्व–अनुदेशक एवं स्व–प्रशिक्षण प्रदान करती है। इससे विद्यार्थी उच्च शिक्षा के विषय में आपस में संवाद कर सकते हैं। इसके साथ ही आपस में पाठ्य–सामग्री के विषय में संवाद कर सकते हैं।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

2.7ई–बुकशॉप

आज इन्टरनेट पर ऑनलाइन बुकशॉप उपलब्ध हैं। जिन पर विद्यार्थी अपनी रुचि के प्रलेखों को खोज सकते हैं। उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है और उन्हे खरीद सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को पाठ्य–सामग्री के चयन में समय की बचत और आसानी से होती है।

2.8 प्रकाशन में इंटरनेट या ऑनलाइन प्रकाशन

आज सभी प्रकार के प्रमुख प्रकाशकों के होम पेज हैं एवं इन्टरनेट पर इनके द्वारा प्रकाशित पाठ्य–सामग्री से सम्बन्धित पूरी जानकारी उपलब्ध है। इसके साथ प्रकाशकों की किताबों को विद्यार्थी ऑनलाइन खरीद सकते हैं। शोध विद्यार्थियों के लिए यह बहुत उपयोगी है।

2.9ई– प्रकाशन

आज जीवन के सभी क्षेत्रों में इंटरनेट ने अपनी पहुँच को आसान किया है। जिससे कि आज इंटरनेट पर किताबों की उपलब्धता में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। जिससे इंटरनेट पर किताबें तथा पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित करना या उपलब्ध कराना ई–प्रकाशन कहलाता है और इस तरहा की पुस्तकें ई–बुक्स कहलाती हैं। जिसकों विद्यार्थी मुफ्त में या शुल्क अदा कर पढ़ सकता है। जिसकों आवश्यकतानुसार डाउनलोड भी किया जा सकता है। दिनों–दिन ई–बुक्स की अधिकता से यह सिद्ध होता है कि विधार्थियों की रुचि इस ओर बढ़ती जा रही है।

3 निष्कर्ष

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उन कार्यों के लिए इस् तेमाल किया जाता है जो इलेक्ट्रॉनिक माध् यम से सूचना केपारेषण, संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान – प्रदान में काम आते हैं। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की इस व् यापक परिभाषा के तहत रेडियो , टीवी , वीडियो , डीवीडी , टेलीफोन (लैंडलाइन और मोबाइल फोन दोनों ही) , सैटेलाइट प्रणाली , कम् प् यूटर और नेटवर्क हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आदि सभी आते हैं य इसके अलावा इन प्रौद्योगिकी से जुड़ी हुई सेवाएं और उपकरण , जैसे वीडियो कॉन् फ्रेंसिंग , ई – मेल और ब् लॉग् स आदि भी आईसीटी के दायरे में आते हैं।

सूचना युग के शैक्षिक उद्देश्श्यों को साकार करने के लिए शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के आधुनिक रूपों को शामिल करने की आवश् यकता है। इसे प्रभावी तौर पर करने के लिए शिक्षा योजनाकारों , प्रधानाध् यापकों , शिक्षकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को प्रौद्योगिकी , प्रशिक्षण , वित् तीय , शैक्षणिक और बुनियादी ढांचागत आवश् यकताओं के क्षेत्र में बहुत से

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

निर्णय लेने की आवश् यकता होगी। अधिकतर लोगों के लिए यह काम न सिर्फ एक नई भाषा सीखने के बराबर कठिन होगा , बल्कि उस भाषा में अध् यापन करने जैसा होगा।

सन्दर्भग्रन्थ– सूची

[1] जीत भाई यो•ेन्द्र – शि{ाा म` नवाचार और नवीन प्रव ृतियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर आ•रा, पंचम ्संस्कर.ा 2004–2005–

[2] कपिल, ,च– के–– सांख्यिकी के म ूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, नविनतम संस्कर.ा 2008–

[3] पारसर, मधू– शैf{ाक तकनीकी प्रबन्ध, कॉल`ज ब ुक शर्मा, नमिता हाऊस, प्रथम संस्कर.ा 2007–

[4] पा.डे रामशकल – पाश्चात्य ,व ं भारतीय शि{ाा दर्शन, आर– लाल बुक डिपो म`रठ, संस्कर.ा 2000–

[5] अरविन्द कुमार शर्मा, शोध प्रविधियाँ एवं सूचना प्रौद्योगिकी, ई.एस.एस. पब्लिकेशन, देल्हीय 2008

[6] एस के मंगल एवं उमा मंगल शिक्षा तकनीकी, पी.एच.एल. लर्निंग, देल्ही, 2009।

[7] आशा गुप्ता उच्च शिक्षा के बदलते आयाम हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2011।

[8] जे.सी. अग्रवाल, एवं एस.एस.गुप्ता, शैक्षिक तकनीकी, शिपरा पब्लिकेशन, 2011।

[9] Abraham Abu] Medium is the Mess Mainstream] August] 1985

[10] Rose A-B- The News Paper Reader in India Sociology Vol- 14] 1966

[11] Yaspal A new Role for for mass media] communication] Vol- XXI No- 3rd and 4th July&Oct- 1986